International Journal of Research in Hindi
www.hindijournal.in
ISSN: 2582-3493
Received: 28-03-2025, Accepted: 27-04-2025, Published: 13-05-2025
Volume 7, Issue 1, 2025, Page No. 11-12

नीरज की कविताओं में प्रेम के विविध रूप

अभय सिंह
शोध छात्र, हिंदी विभाग, दिग्विजय नाथ पी. जी. कॉलेजएगोरखपुर, संबद्ध दीनदयाल उपाध्याय गोरखपुर विश्वविद्यालय, उत्तर प्रदेश, भारत

सारांश
गोपालदास नीरज ने अपने प्रेम से भरे गीतों के माध्यम से भारत ही नही पूरे विश्व के पाठकों को जीवन जीने का सही रास्ता दिखाया है। इनकी कविताओं में प्रेम विभिन्न रूपों में दिखाई पड़ता है जिसका विस्तार मनुष्य के निजी जीवन से लेकर पूरे विश्व को अपने भीतर समेट लेता है। यह प्रेममयी चेतना विभिन्न सोपानों से क्रमशः ऊर्ध्वगामी होती हुई क्रमशः अपनी यात्रा ईश्वर तक पहुँचकर समाप्त होती है। इस प्रकार नीरज की कविताओं में प्रेम का विस्तार क्षैतिज और ऊर्ध्वगामी दोनों है।

मूल शब्दः गोपालदास नीरज, प्रेममयी चेतना, हिंदी कविता, जीवन-दर्शन

गोपालदास नीरज अपने प्रेम भरे गीतों के लिए प्रसिद्ध हैं। प्रेम विश्व सृजन का आधार है। परस्पर प्रेम के अभाव के कारण यह संसार भयंकर चुनौतियों का सामना कर रहा है। ईश्वर ने यह धरती संसार में रहने वाले प्राणियों को सौंप दी। मनुष्य ने अन्य प्राणियों से आगे निकलकर इस संसार पर अधिकार कर लिया। अब मनुष्यों में भी आपसी वैमनस्य के कारण विभाजनकारी कार्य क्रियान्वित किए जा रहे हैं। न केवल व्यक्ति का व्यक्ति से बल्कि व्यक्तियों के समूह की दूसरे व्यक्तियों के समूह से शत्रुता बढ़ रही है। यही शत्रुता बढ़ते-बढ़ते दो राष्ट्रों के बीच भी रहती है। इस शत्रुता के अनेक कारण हो सकते हैं किन्तु इसका उपचार एक मात्र परस्पर सहिष्णुता व प्रेम ही है। यह प्रेम ही है जिससे इस संसार के सभी प्राणियों को एकता की माला के रूप में पिरोया जा सकता है।

गोपालदास नीरज ने 'दर्द दिया है' नामक काव्य-संग्रह में अपनी कविताओं के बारे में स्पष्ट कहा है कि "मैं अपनी कविता द्वारा मनुष्य बनकर मनुष्य तक पहुँचना चाहता हूँ। वही मेरी यात्रा का आदि है। और वही अन्त। रास्ते पर कहीं मेरी कविता भटक न जाए। इसलिए उसके हाथ मैंने प्रेम का एक दीपक दे दिया है। मानवीय सम्बन्धों में मेरे विचार से प्रेम सर्वश्रेष्ठ सम्बन्ध है। तो प्रेम और विशेष रूप से मानव-प्रेम मेरी कविता का मूल स्वर है।"[1]

नीरज की कविताओं में प्रेम के विविध रूपों को मुख्य रूप से दो भागों में विभाजित किया जा सकता है-

सांसारिक प्रेम

नीरज की कविताओं में सांसारिक प्रेम के कुछ रूप निम्नलिखित है-

1. मानव प्रेम

इनकी कविताओं में मानव प्रेम के दो रूप हैं-

- मानव प्रेम का मांसल रूप
- मानव प्रेम का दार्शनिक रूप

2. देश प्रेम,
3. विश्व प्रेम,

आध्यात्मिक प्रेम

नीरज ने इस संसार में प्रेम के क्रमिक विकास को महत्व दिया है। नीरज ने सबसे पहले मानव और उसकी मानवता को महत्व दिया है। सभी धर्मों से ऊपर उठते हुए इन्होने मानवतावाद को अपनाया है। मानवतावाद ही वह सीढ़ी है जिसपर चढ़कर नीरज का प्रेम क्रमशः देश और विश्व प्रेम के स्तर तक पहुँच जाता है।

आदमी हो तुम कि उठो आदमी को प्यार दो,
दुलार दो।
रोते हुए आँसुओं की आरती उतार दो।[2]

नीरज की कविताओं में प्रेम अपनी पूर्ण माँसलता के साथ प्रकट होता है और दार्शनिकता के साथ समाप्त होता है। माँसलता को वासना शब्द से भी व्यक्त किया जा सकता है। "यही सृष्टि की प्रजनन-प्रक्रिया है। इसे ही वासना कहा गया है। यही प्रत्येक कला और साहित्य की मूल प्रेरणा है। यही वासना भिन्न-भिन्न चेतना-स्तरों पर भिन्न-भिन्न रूप धारण करती है।"[3]

देखती ही न दर्पण रहो प्राण! तुम
प्यार का यह मुहूरत निकल जाएगा।

मानव शरीर में पाँच कोष (अन्नमय कोश, प्राणमय कोश, मनोमय कोश, विज्ञानमय कोश व आनन्दमय कोश) होते हैं। मानव चेतना इन्ही कोशों से क्रमशः ऊपर की ओर उठती है। चेतना के अन्नमय कोश में होने के कारण मनुष्य मांसलता से आक्रान्त रहता है। और इस समय उसके भीतर का पशु प्रबल होता है। वह पाना तो चाहता है किन्तु देना कुछ नही चाहता-यही पाशविक वृत्ति है और इसी का नाम स्वार्थ है।[5]

आज की रात बड़ी शोख़, बड़ी नटखट है
आज तो तेरे बिना नींद नही आएगी,
आज तो तेरे ही आने का यहाँ मौसम है,
आज तबीयत न ख़यालों से पाएगी![6]

मनुष्य की यही चेतना जब आनन्दमयी कोश में प्रवेश करती है तो उसका प्रेम पूर्ण रूप से दार्शनिकता को प्राप्त कर लेता है। उसे हर जगह किसी अज्ञात शक्ति का प्रभाव महसूस होने लगता है।

तब याद किसी की आती है।
मधुकर गुन-गुन धुन सुन क्षण-भर,
कुछ अलसाकर, कुछ शरमाकर,
जब कमल-कली धीरे-धीरे निज घूँघट-पट खिसकाती है।
तब याद किसी की आती है।[7]

इस बिन्दु पर आकर मनुष्य अपने बारे में ही नही बल्कि समाज के बारे में भी सोचता है। वह अपने देश के कल्याण की भावना रखता है।

जय जय जय जयति हिन्द!
प्राची दिशि हरित भरित
श्यामलांग बंग-देश,
शोभित शुभ पश्चिमांग
काबुल कल किरण वेश[8]

मानव प्रेम जब अहं की कारा को लाँघकर वयं की भवना को अपना लेता है तो कोई भी व्यक्ति उसे अपना शत्रु नही लगता है। वह सबसे प्रेम करना चाहता है, सबको अपना बनाना चाहता है फिर चाहे परिस्थिति कितनी ही कठिन क्यों न हो-

भँवरों की गुनगुन वाले!
फूलों की रुनझुन वाले!
पाटल रूप-रतन वाले!
ओ शरमीले काश्मीर उठ! दुश्मन को ललकार दे।
झूम उठे ख़ैबर-हिन्दूकुश, ऐसी नई बहार दे।।[9]

वह सम्पूर्ण संसार से अपना सम्बन्ध विकसित करना चाहता है। इस स्तर पर भारतीय संस्कृति का आदर्श विचार ष्वसुधैव कुटुम्बकम्ष् सार्थक प्रतीत होता है।

मैं उन सबका हूँ कि नहीं कोई जिनका संसार में!
एक नहीं, दो नहीं, हज़ारों साझी मेरे प्यार में!![10]

इसके अलावा वह यह सोचता है कि

इसको भी अपनाता चल,
उसको भी अपनाता चल,
राही हैं सब एक डगर के, सब पर प्यार लुटाता चल।[11]

इसी प्रकार मानव चेतना का अन्तिम लक्ष्य ईश्वर को प्राप्त करना होता है। नीरज की कविताओं में भी मानव प्रेम की चरम परिणति ईश्वर प्रेम में समाप्त होती है। कवि की आत्मा उस विराट् और अनन्त का साक्षात्कार करना चाहती है जो इस संसार को संचालित करती है तथा इसका सृजन और संहार भी करती है।

निराकार! जब तुम्हे दिया आकार, स्वयं साकार हो गया।[12]

नीरज उस ईश्वर से इतना प्रेम करने लगे हैं कि उन्हे विरह की भावना का एहसास हो गया है। ऐसे में वे द्वैत की स्थिति से अद्वैत की स्थिति में पहुँच रहे हैं।

तुमसे लगन लगाई,
उमर भर नींद न आई।
साँस-साँस बन गई सुमिरणी,
मृगछाला सब की सब धरिणी
क्या गंगाए कैसी वैतरिणी,
भेद न कुछ कर पाई,
दहाई बनी इकाई।[13]

निष्कर्ष

गोपालदास नीरज के गीतों में हमें प्रेम के विभिन्न रूपों को दर्शन होते हैं। ये रचनाएँ न केवल पाठकों की भावनाओं को आराम पहुँचाती हैं बल्कि प्रेम को ऐसी शक्ति के रूप में भी दिखाती हैं जो मानवता को जीवन में आगे बढ़ने के लिए प्रेरित करती हैं। इसके साथ ही ये रचनाएँ जीवन के उतार-चढ़ाव में संयम बनाए रखने की प्रेरणा देती हैं।

नीरज ने साहित्य के विभिन्न वादों से बचते हुए एक बेशकीमती तथा सर्वमान्य रास्ता निकाला है जिसपर यदि गम्भीरता से यदि विचार किया जाए तो मानव सभ्यता की अनेक समस्याओं का समाधान निकल सकता है। प्रेम का रास्ता एक ऐसा क्रान्तिकारी विचार है जो मानव चेतना को शुद्ध कर देगा जिससे आपसी वैमनस्य समाप्त हो जाएंगे।

आज भले कुछ भी कह लो तुम
पर कल विश्व कहेगा सारा
नीरज के पहले गीतों में
सब कुछ था पर प्यार नही था[14]

नीरज की कविताओं का सार यही है-

प्रेम है कि ज्योति-स्नेह एक है,
प्रेम है कि प्राण-
देह एक है,
प्रेम है कि विश्व गेह एक है,
प्रेमहीन गतिए प्रगति विरुद्ध है।
प्रेम तो सदैव ही समृद्ध है।।[15]

संदर्भ सूची

1. दर्द दिया है, गोपालदास नीरज, आत्माराम एण्ड संस, वर्ष–1986, पृष्ठ संख्या–9
2. वही, पृष्ठ संख्या–337
3. दर्द दिया है, गोपालदास नीरज, आत्माराम एण्ड संस, वर्ष–1986, पृष्ठ संख्या–10
4. नीरज के प्रेमगीत, गोपालदास नीरज, किताबघर प्रकाशन, वर्ष–2020, पृष्ठ संख्या–68
5. दर्द दिया है, गोपालदास नीरज, आत्माराम एण्ड संस, वर्ष–1986, पृष्ठ संख्या–10
6. पुष्प पारिजात के, गोपालदास नीरज, पेंगुइन बुक्स, वर्ष–2007, पृष्ठ संख्या–25
7. नीरज के प्रेमगीत, गोपालदास नीरज, किताबघर प्रकाशन, वर्ष–2020, पृष्ठ संख्या–37
8. नीरज रचनावली, खण्ड–1, गोपालदास नीरज, आत्माराम एण्ड संस, वर्ष–2019, पृष्ठ संख्या–100
9. नीरज की पाती, काश्मीर के नाम, गोपालदास नीरज, हिन्द पॉकेट बुक्स, वर्ष–1990, पृष्ठ संख्या–42
10. वही, पृष्ठ संख्या–33
11. वही, पृष्ठ संख्या–15
12. वही, पृष्ठ संख्या–363
13. वही, पृष्ठ संख्या–12
14. गीत जो गाए नहीं, गोपालदास नीरज, डायमण्ड पॉकेट बुक्स, पृष्ठ संख्या–11
15. वही, पृष्ठ संख्या–297